❋ प्रथम अध्याय ❋

साधुराम दर्शक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

❋ प्रथम अध्याय ❋

साधुराम दर्शक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 व्यक्तित्व :

प्रस्तावना :

हर साहित्यकार सृजन करते समय उन सम-सामायिक परिस्थितियों का जैसे कि आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि का चित्रण किये बिना साहित्य सृजन नहीं कर सकता। अतः उस साहित्यकार का संपूर्ण जीवन प्रभाव उनके साहित्य पर दिखाई देता हैं। किसी भी लेखक का साहित्य उसके विचारों एवं भावनाओं का दर्पण होता हैं। इसलिए किसी भी साहित्यकार की कृति को समझने से पहले उनके जीवन की घटनाओं को जानना आवश्यक है।

साधुराम दर्शक जी ने बचपन से लेकर आज तक का जो जीवन भोगा-समझा,जाना उसीका प्रतिबिम्ब उनका साहित्य है। गरीबी, अज्ञान, बीमारी, अंधविश्वास आदि का चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में किया है। जमींदारों का राज सारे गांव पर था, गरीबों पर जोर-जुल्म की घटनाएँ प्रायः घटित होती रहती। इन सभी कुरीतियों का प्रतिकार अकेले मनुष्य ने करना इतना आसान नहीं था इसलिए अपनी प्रतिकार की भावनाओं को साकार रूप देने के लिए लेखन का हथियार उठाया। उपेक्षित वर्ग के जीवन की दयनीयता, निर्धनता, अभाव, उससे उत्पन्न समस्याएँ इन्हें उन्होंने निकट से देखा और उन्हें साहित्य में उतारने का प्रयास किया। दर्शक जी की पहचान - 'जन-हित के प्रति उनकी प्रतिबध्दता हैं।' वे प्रेमचंद जी की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परंपरा को आगे बढ़ानेवाले कहानीकार हैं।

1.1.1 जन्म :

दर्शक जी का जन्म 31 जनवरी 1932 में हिमाचल प्रदेश के 'ऊना' जिले के बेहद पिछड़े 'बाथु' नामक गांव में हुआ। उनका जन्म परिवार में बहुत खुशियाँ लेकर आया। इसलिए घर में वे सबसे लाड़ले रहे। लेकिन उनका बचपन बहुत कठिनाईयों में गुजरा।

1.1.2 माता-पिता :

साधुराम दर्शक जी की माताजी का नाम 'श्रीमती चिन्तीदेवी'। सब बच्चे इन्हें 'बीबी' कहकर बुलाते थे। बहुत दुबली पतली परंतु अपने परिवार के सभी सदस्यों का खयाल रखनेवाली थी।

पिताजी का नाम 'मिलखीराम' था। उन्हें सभी बच्चे 'बाई' के नाम से बुलाते थे। वे पढ़े-लिखे नहीं थें लेकिन मेहनती, तथा लंबें-तगड़े जवान होने से उन्हें खुद पर अधिक भरोसा था। उनका स्वभाव बाहर से सख्त तथा अंदर से नर्म था। वे पन्सारी की दुकान चलाते हुए वैद्यजी का भी काम करते थे। उन्हें अपने परिवार से बहुत प्यार था, उनका देहांत 1964 में हुआ।

1.1.3 परिवार :

साधुराम दर्शक जी 'खत्री' परिवार के रहे। दादी, चाचा-चाची, दो बड़ी बहनें तथा एक भाई आदि सदस्य थे। इन में से दादी का अधिक प्रभाव उनपर रहा।

विवाह :

उनका विवाह बारह साल की उम्र में सट्टे-बट्टे के हिसाब से हो गया था। उनकी पत्नी का नाम कमलादेवी। वे इस विवाह से खूश नहीं थे क्योंकि वे अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते थे। इसलिए वे अपनी पत्नी को गांव छोड़कर दिल्ली आ गये लेकिन कुछ सालों के पश्चात् उनका दाम्पत्य जीवन सही अर्थ से आरंभ हुआ।

1.1.4 संतान :

उन्हें दो बेटियाँ तथा एक बेटा है। उनकी बड़ी बेटी 'सुमनलता' सेंट्रल बैंक में क्लर्क हैं, उनका आंतरजातीय विवाह हुआ है। दूसरा बेटा वीरेंद्र लुधियाना में कृषि इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। तीसरी बेटी 'कुसुमलता' सेंट्रल न्यूज एजेंसी में नौकरी करती है।

1.1.5 शिक्षा एवं नौकरी :

साधुराम दर्शक जी ने मैट्रिक पास होते ही पारिवारिक खस्ता हालत को सुधारने के लिए ड़ाक विभाग में नौकरी पकड़ ली। नौकरी करते हुए उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की एवं आर्थिक कठिनाईयों का सामना करते हुए 'प्रभाकर' इंटर 'अंग्रेजी' बी.ए. अंग्रेजी पत्राचार में सफलता प्राप्त की। 'अरियन्टल कर्मशल कॉलेज होशियारपुर में टाईप-शार्ट हेड़' का कोर्स किया। आज भी उन्हें हिंदी, संस्कृत तथा इतिहास में एम.ए. न कर सकने का अफसोस हैं।

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

1.2.1 संवेदनशील व्यक्तित्व :

मूलतः स्वभाव से संवेदनशील एवं भावुक होने के कारण साधुराम दर्शक जी ने बचपन से ही गाँव की दयनीयता, अज्ञान, जोर-जुल्म की घटनाएँ, आर्थिक समस्या इन्हें देखा, भोगा तथा समझा इसलिए उनके साहित्य में भी ऐसी ही घटनाओं का आँखों देखा हाल वर्णित हैं। समाज के उपेक्षित तथा शोषित लोगों को न्याय दिलाने का कार्य उन्होंने अपनी कहानियों में तथा जीवन में भी किया हैं। सच्चाई की राह पर चलनेवाले दर्शक जी हर बात को गहराई से सोचते और गंभीरता से लेते है। परिणामस्वरूप उन्होंने कर्मचारी संघ में हड़ताल होने के कारण 1968 में मजदूरों को न्याय दिलाने के लिए अपने साथियों के साथ हड़ताल में शामिल हो गये और 'पाँच दिन जेल में रहे और छह महिनों तक उन्हें नौकरी से निलंबित किया था। इन छह महिनों में उन्हें बहुत कठिनाईयाँ झेलनी पड़ी थी। इन सब बातों का उनके दिल पर गहरा असर पड़ा था।

दर्शक जी का साहित्य सृजन स्वातंत्र्योत्तर काल का है। इसलिए उनकी अधिकांश रचनाएँ साम्प्रादायिक समस्या को प्रस्तुत करती हैं। जैसे 'नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार, 'पंछी-बाबा', अतीत, जिन्दा-मुर्दा आदि कहानियाँ।

1.2.2 शर्मिला तथा दब्बू स्वभाव :

साधुराम दर्शकजी गाँव के परिवेश में रहनेवाले थे परिणामतः उनका

स्वभाव शर्मिला, मितभाषी तथा दब्बू रहा लेकिन इसी स्वभाव के कारण वे हमेशा पीछे रहे हैं। उनके मितभाषी तथा संकोची स्वभाव से ही विवाह करने की इच्छा न होते हुए भी अपने पिताजी के सामने खुलकर विरोध न कर सके। लेखक बन जाने पर भी अपने लेखन को प्रकाशित करते समय भी उनका यही स्वभाव आड़े आ गया, इसलिए वे प्रसिध्दि के क्षेत्र से हमेशा दूर रहे। शायद शर्मिला तथा दब्बू स्वभाव उनके व्यक्ति विकास में बाधा डालनेवाला दोष सिध्द हुआ।

1.2.3 संघर्षशील व्यक्तित्व :

बचपन से लेकर आज तक वे अपने व्यक्तिगत जीवन तथा बाहरी जीवन में संघर्ष करते हुए पाए जाते हैं। लेखकीय जीवन में भी उन्हें हमेशा संघर्ष करना पड़ा इसलिए उनका संघर्षशील व्यक्तित्व कथा साहित्य में अभिव्यक्त हुआ हैं। जैसे 'कुत्ता-जिन्दगी' कहानी का पात्र 'रमेश' तथा 'ड़ायरी के कुछ पन्ने' कहानी के 'कपूर साहब' आदि।

1.2.4 कर्तव्यनिष्ठ :

संवेदनशील एवं शर्मिले स्वभाव के होते हुए भी साधुराम दर्शक जी कर्तव्यदक्ष इंसान रहे। वे घर समाज तथा अपने देश के प्रति व्यक्तिगत अपना कुछ कर्तव्य समझते हैं। घर की सारी जिम्मेदारियों को उन्होंने अच्छी तरह से निभाया हैं, यहाँ तक की दादी माँ के अंत्यावस्था के दिनों दो महिनों की छुट्टी लेकर उन्होंने दादी माँ की सेवा की तथा आदर्श पोता होने का कर्तव्य पूरा किया।

परिवार की जिम्मेदारी में कर्तव्यनिष्ठ होने के साथ उन्होंने नौकरी के समय भी ईमानदारी तथा सेवाभावी वृत्ति से कार्य किया है। वे अपने जीवन में आई समस्याओं से संघर्ष करते हुए अपने कर्तव्य पर अटल रहे है। साहित्य सृजन चाहे उनकी अपनी रूचि रही परंतु सामाजिक दायित्व निभाने का वह एक श्रेष्ठ कर्म है, ऐसा समझकर अपने साहित्य सृजन के कर्तव्य पर अटल रहें।

1.2.5 मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित :

साधुराम दर्शक जी मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित रहें। उनका

'संघर्षों के बीच' उपन्यास इसी विचारधारा की देन है। जिसमें जन आंदोलन की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इस संदर्भ में उनका अपना मत है - ''मैं तो मार्क्सवादी विचारधारा को पाले हूँ। मैंने एक उपन्यास लिखा है 'संघर्षों के बीच' यह जन आंदोलन की आवश्यकता को बल देता है। बिना हाथ पाँव हिलाए कुछ नहीं बनता''[1]

1.2.6 शिक्षाप्राप्ति की तीव्र लालसा एवं लेखन संस्कार :

साधुराम दर्शक जी की मैट्रिक तक की पढ़ाई ठीक रही, लेकिन विवाह के पश्चात् उन पर परिवार की जिम्मेदारी आ गई। इसलिए उन्होंने प्रभाकर, इंटर अंग्रेजी, बी.ए. अंग्रेजी आदि शिक्षा पत्राचार से की। साथ ही ड़ाक-विभाग में नौकरी करते रहे। लेकिन ज्ञान-पिपासा अभी भी शांत न हो सकी। लेखन के शौक के बारे में वे खुद कहते हैं - ''गांव में जमींदार का राज था। जोर-जुल्म की घटनाएँ प्रायः घटित होती। ये मेरे दिमाग पर बहुत प्रभाव डालतीं। कम उम्र, शरीर, कमजोर, पर प्रतिकार की भावनाएँ उठतीं, तेज होती। मैं कुछ कर न पाता। उसी का प्रभाव है लिखना। प्रतिकार की जो भावनाएँ दिमाग में उठतीं, वे कागज के पन्नों पर उतरने लगीं।''[2]

तात्पर्य -

1. साधुराम दर्शक जी का जन्म 'खत्री' परिवार में हुआ।
2. आर्थिक तथा सामाजिक कठिनाईयों से जूझते हुए सच्चाई तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्य को निभाते हुए जीवन बिताते हैं।
3. दर्शक जी का जीवन हमेशा संघर्षरत रहा, इसलिए उनका जीवन पाठकों के लिए आदर्श हैं।

1.3 कृतित्व :

साधुराम दर्शक जी का कृतित्व उपन्यास, कहानियों और स्तंभ लेख के रूप में उपलब्ध है। उनकी रचनाओं को विद्वानों की मान्यता और प्रशंसा प्राप्त है।

1.3.1 कहानी संग्रह :

कहानी संग्रह	सन	प्रकाशन
❖ धारा बहती रही	1977	पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस(प्रा.) लिमिटेड दिल्ली।
❖ दुःस्वप्न का अन्त	1989	राष्ट्रीय प्रगतिशील लेखक महासंघ
❖ सलीब पर लटका मसीहा	1990	सुनील साहित्य सदन दिल्ली।
❖ एक और सावित्री	1996	अनिल प्रकाशन दिल्ली।
❖ नन्हा गुलाब, बूढा खार	1997	पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस(प्रा.) लिमिटेड दिल्ली।
❖ मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ	1999	अनिल प्रकाशन दिल्ली। प्रथम संस्करण
❖ मेरी साम्प्रदायिक तथा आंतकवाद विरोधी कहानियाँ	2002	पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस(प्रा.) लिमिटेड दिल्ली।
❖ फौजी तथा अन्य कहानियाँ	2005	साहित्य मंदिर दिल्ली।

1.3.2उपन्यास :

उपन्यास	सन	प्रकाशन
❖ संघर्षो के बीच		पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस(प्रा.) लिमिटेड दिल्ली।

1.3.3सम्मान एवं पुरस्कार :

साधुराम दर्शक जी को अपना साहित्य प्रकाशित करने के लिए बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा उन्हें जो भी पुरस्कार प्राप्त हुए उस संदर्भ में वे कहते हैं - ''पाठकों का तो असीम प्यार मुझे मिला हैं। हर कहानी प्रकाशित होने पर चार-पाँच पत्र आ ही जाते हैं। पत्र पढ़कर मन उत्साह से भर उठता हैं लगता है,

कहानी लिखने में जो श्रम लगा हैं, वह सार्थक हुआ है।''

1. ''सरिता'' पत्रिका द्वारा 1962 में आयोजित कहानी प्रतियोगिता में 'मनहूस' कहानी 'सांत्वना पुरस्कार' मिला।
2. ''ड़ाक-तार'' 1966 कहानी प्रतियोगिता में 'हार-जीत' कहानी को द्वितीय पुरस्कार मिला।
3. ''एक और सावित्री'' कहानी संग्रह को 1996-97 का ग्यारह हजार रूपये का साहित्यिक कृति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।
4. ''नन्हा गुलाब, बूढ़ा खार'' कहानी संग्रह के लिए 1997 का राष्ट्रीय संजय-अनिता स्मृति शिखर साहित्य पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार 'हंस' पत्रिका विज्ञापन से प्रकाशित हुआ।
5. हिमोत्कर्ष साहित्य प्रकाशन एवं जन-कल्याण परिषद ऊना, हिमाचल प्रदेश की ओर से साहित्य सेवा के लिए 1993-94 का विशिष्ट नागरिक सम्मान से सम्मानित किया।
6. सहस्त्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन-2000 द्वारा राष्ट्रीय हिंदी सेवी सहस्त्राब्दी सम्मान से सम्मानित किया।
7. भारतीय साहित्य परिषद दिल्ली प्रवेश द्वारा 'मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ' पुस्तक के लिए 1999-2000 का 'कमला रत्नम सन्मान' से सन्मानित किया गया।
8. साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक संस्था 'प्रवाह' इन्दौर द्वारा आयोजित - प्रतियोगिता में 'पंछी-बाबा' कहानी को विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त हुआ।

साधुराम दर्शक जी को इन सभी पुरस्कारों के पश्चात् पाठकों द्वारा मिली प्रतिक्रियाएँ प्रेरणादाई लगती है। इस संदर्भ में वे कहते हैं - ''हर कहानी प्रकाशित होने पर चार-पांच पत्र आ ही जाते हैं। पत्र पढ़कर मन उत्साह से भर उठता है। लगता है, कहानी लिखने में जो श्रम लगा है, वह सार्थक हो गया।''[3]

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि साधुराम दर्शक जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विशेषताएँ विश्लेषित करने पर ज्ञात होता है कि उनका बचपन 'बाथु' नामक अत्यंत पिछड़े हुए गांव में बीता। बचपन में वे प्रायः बीमार रहते थे। उनकी प्रायमरी शिक्षा संतोषगढ़ में हुई। परिवार वालों से उन्हें बहुत प्यार मिला। बचपन का समय दादी माँ के साथ अधिक बिताया इसलिए उनपर दादी माँ का प्रभाव अधिक दिखाई देता हैं।

बारह साल की उम्र में शादी हो जाने पर घर की जिम्मेदारी असमय ही उनके कन्धे पर आई। जिसका उनके मन पर गहरा असर हुआ और उन्हें अपना विवाह शिक्षा के मार्ग में आई बाधा अनुभव हुई। आर्थिक कठिनाईयों से लड़ते-लड़ते उन्होंने प्राइवेट तौर पर पढ़ना शुरू किया। फिर भी हिंदी, संस्कृत तथा इतिहास में एम.ए. करने की ज्ञानपिपासा अधूरी रही। साधुराम दर्शक जी कर्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील, संकोची वृत्ति के व्यक्ति होने के पश्चात् भी संघर्षशील तथा मार्क्सवादी हैं। उन्होंने अपने साहित्य में समाज का देखा-सूना भोगा हुआ यथार्थ चित्रित किया हैं।

गाँव में हर दिन घटित होनेवाली जुल्म की घटनाएँ बचपन से ही दर्शकजी के मन पर गहरा असर करती रही, यहीं से उनके लेखन की शुरूवात हुई है। उनकी कहानियों में गरीबी, बीमारी, अज्ञान, शोषण, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याएँ उद्घाटित होती हैं। सामान्य लोगों के जीवन की विषमताएँ तथा उन विषमताओं के भंवर में डूबते-उभरते लोगों की वास्तविकता चित्रित हुई है। वर्तमान समाज में फैली व्याधियों से आम इंसान की पीड़ा, झुंझलाहट, अपमानित जीवन उनके न्यायपूर्ण आक्रोश को समझने तथा रेखांकित करने का सफल प्रयास उन्होंने किया है।

साधुराम दर्शक की कहानियों का कथानक उत्तर भारत, हिमाचल प्रदेश से लेकर दिल्ली तक के जन-जीवन, जन-संघर्ष, बोली-बानी, परिवेश, रीति-रिवाज तथा संस्कृति आदि का विस्तृत चित्रण है। उनकी कहानियाँ विष्णु

प्रभाकर, भीष्म-साहनी, खगेन्द्र ठाकुर, मधुरेश, केवल गोस्वामी आदि प्रख्यात साहित्यकारों ने पढ़ी हैं और उन्हें सराहा है। उनकी रचनाएँ अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत है। अपने इस साहित्यिक सृजन कर्म के लिए वे विविध सन्मानों से सन्मानित हुए हैं। उनकी कहानियों की भाषा सीधी एवं सरल होने से पाठक के हृदय में गहराई से उतर जाती है और पाठकगण अंर्तमुख हो जाता है।

तात्पर्य - साधुराम दर्शक जी के जीवन के समग्र पहलुओं का अनुशीलन करने से दृष्टिगोचर होता है, कि उन्होंने अपनी आदर्शवादी कहानियों के माध्यम से उपेक्षित सामान्य लोगों का यथार्थ जीवन चित्रित किया है।

संदर्भ सूची

1. दिव्य हिमाचल (पत्रिका), हिमाचल के लेखक किसी से उन्नी नहीं, एक्कीस जरूर हैं - साधुराम दर्शक की मौखिकी - सुदर्शन भाटियाने ली उससे उद्धृत 27 जून 1998

2. वही.

3. साधुराम दर्शक, श्रम के मोती (अप्रकाशित आत्कथा), पृ.126

*****